रचना समय

अगस्त-सितम्बर
2019

अल्बैर् कामू
विशेषांक

मृत्यु की दुर्गन्ध से ग्रसित इतिहास को नैतिक पोस्टमार्टम की ज़रूरत है। हम उस अँधेरे जगत में निवास करते हैं जो हमारी करनी का फल है। यदि हम स्वयं को जानना चाहते हैं तो अपनी असफलताओं से जानें। हमारी सबसे बड़ी असफलता तो यह है कि हम इंसान नहीं हो सके।

– अल्बैर् कामू

रज़ा फ़ाउण्डेशन | THE RAZA FOUNDATION
यह अंक रज़ा फ़ाउण्डेशन के सहयोग से प्रकाशित

सम्पादक
हरि भटनागर
बृजनारायण शर्मा

•

सम्पादन सहयोग
आनंद बहादुर

आवरण पर
अल्बैर् कामू

सज्जा
प्रीति भटनागर

मूल्य : 200 रु.

•

ग्राहकीय एवं सम्पादकीय पता :
रचना समय
हरि भटनागर / बृजनारायण शर्मा
197, सेक्टर-बी सर्वधर्म कालोनी, कोलार रोड,
भोपाल - 462042 (मध्यप्रदेश)
मोबा. : 9424418567, 9826244291
E-mail : haribhatnagar@gmail.com

•

शब्द संयोजन एवं मुद्रक :
बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स,
14-बी, सेक्टर-आई, इंडस्ट्रियल एरिया,
गोविंदपुरा, भोपाल : 2587551

•

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए
सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं।
सम्पादक पूर्णत: अवैतनिक।

रचना समय
अगस्त-सितम्बर 2019

यह अंक

'रचना समय' का यह अंक फ्रेंच रचनाकार अल्बैर् कामू पर एकाग्र है।

अल्बैर् कामू का जन्म फ्रांस के तत्कालीन उपनिवेश, अल्जीरिया में 1913 में हुआ। एक तरह से कहा जाए कि कामू अफ्रीका के एक छोटे से गुलाम देश–अल्जीरिया में पैदा हुए जहाँ फ्रांस का क्रूर शिकंजा था। उस शिकंजे की कल्पना की जा सकती है– दमन, ख़ून–ख़राबा, लूट–खसोट, उत्पीड़न, नस्ली हिंसा, अभिव्यक्ति की आज़ादी पर बंदिशें– अल्बैर् कामू का मानस इन्हीं स्याह जंजीरों के बीच निर्मित हुआ। अल्बैर् कामू में ज्याँ पाल सार्त्र जैसी प्रतिबद्धता थी फिर भी वो वैचारिक प्रतिबद्धता की जड़ता को नामंजूर करते थे– इसलिए वे समय–समय पर प्रतिबद्धता के ख़िलाफ़ मुखर होते रहे, और अपने अनुभवों की ख़ामोश दुनिया को ज़बान देते रहे। कह सकते हैं, कामू के समूचे लेखन पर उनके गुलाम देश, अल्जीरिया के चप्पे–चप्पे के कराह की गहरी अनुगूँजें हैं– इन्हीं गहरी अनुगूँजों में ज़िन्दगी के बेतुकेपन (एब्सर्डिटी) का प्रश्न रूप लेता है। घोर सामाजिक प्रतिबद्धता के बीच जीवन की तुच्छता का संज्ञान–सवाल खड़ा करता है कि ज़िन्दगी के प्रति ऐसा नकारात्मक रवैया आख़िर क्यों? – कार्ल मार्क्स ने स्वीकारा है कि विचार अंतिम सत्य नहीं, वरन् जीवन अंतिम सत्य है– इस विचार की रौशनी में कामू के समस्त लेखन को उनके देश की सामाजिक संरचना में देखने की ज़रूरत है। कामू एक कलाकार की तरह जिए, किसी जड़ीभूत बंधन को स्वीकार नहीं किया, तभी उन्होंने कहा– "हर कलाकार के हृदय की गहराइयों में कहीं एक दरिया बहता है और जब तक वह जीता है अपने इसी दरिया के पानी से प्यास बुझाता है। जब भी उसका यह दरिया सूखता है, तब हम उसके लेखन की धरती में उभरती हुई दरारों को समझ पाते हैं। कला की यह ऐसी बंजर ज़मीन है, मरुस्थल है, जहां लेखन में कहीं कोई आर्द्रता नज़र नहीं आती, जगह–जगह बालू की ढूहें जैसे अक्षर आँखों में किरकिराने लगते हैं। तब लेखन की यात्रा में थका हुआ कलाकार अपने

बिखरे केश और पपड़ाए होंठों के साथ या तो हमेशा के लिए मौन हो जाता है, या फिर सभा–सोसाइटी और मंचों का एक अच्छा वक्ता बन कर खड़ा हो जाता है, मगर वह सर्जक नहीं रहता।"

कामू में एक सर्जक की तल्खी थी– इसी तल्खी के मद्देनज़र उन्हें उनके छोटे–से उपन्यास 'अजनबी' के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया– गुलाम देश के एक रचनाकार को, वह भी युवा जो मात्र 45 वर्ष का था– अल्जीरिया की आज़ादी के लिए संघर्षरत् जनता को समर्पित था। कुछ ही वर्षों के अंतराल में मात्र 47 वर्ष की आयु में कामू की कार दुर्घटना में मृत्यु– क्या यह जीवन की तुच्छता का बोध नहीं कराती?

•

यह अंक अल्बैर् कामू को श्रद्धांजलिस्वरूप अर्पित है।

हमने कोशिश की है कि कामू की वे रचनाएँ सामने आएँ जो हिन्दी में तकरीबन अदृश्य रही हैं।

•

विश्वास है, पाठकों को अल्जीरिया की यह क़लम पसंद आएगी।

– हरि भटनागर

क्रम

व्याख्यान

नोबेल पुरस्कार व्याख्यान 07

वक्तव्य

रोटी और आज़ादी 11

बातचीत

अल्बैर् कामू से जनीन डेलपेच की बातचीत 17

अल्बैर् कामू से गैब्रियल डे ओबाएड् की बातचीत 20

अल्बैर् कामू से ज़्वां क्लोद ब्रिसलीव की बातचीत 26

फाँसी का समाजवाद 32

हमारी पीढ़ी के दाँवबाज़ 36

कहानी

आगंतुक 42

मौन लोग 52

निबंध

टिपासा लौटना 62

टिपासा में विवाह 68

सिसिफस की गाथा 73

बादाम का पेड़ 76

जिन शहरों का कोई अतीत नहीं
ऐसे शहरों के लिए भ्रमण–सहायिका 79

हेलन का निर्वासन 83

नाटक

कैलिगुला 87

भिड़ंत

सार्त्र और कामू
एक ऐतिहासिक भिड़ंत 105

जीवन–वृत्त

अल्बैर् कामू : एक परिचय 155

कामू का ख़त

अपने शिक्षक के नाम 159

अल्बैर् कामू